मासिक

RNI No. MPHIN/2004/14249

# अक्षर वार्ता

मूल्य: 250 /- रूपये

डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

वर्ष - 21 अंक - 6
( अप्रैल - 2025 )
Vol - XXI, Issue No - VI
(April - 2025)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

9.0
Impact Factor
2025

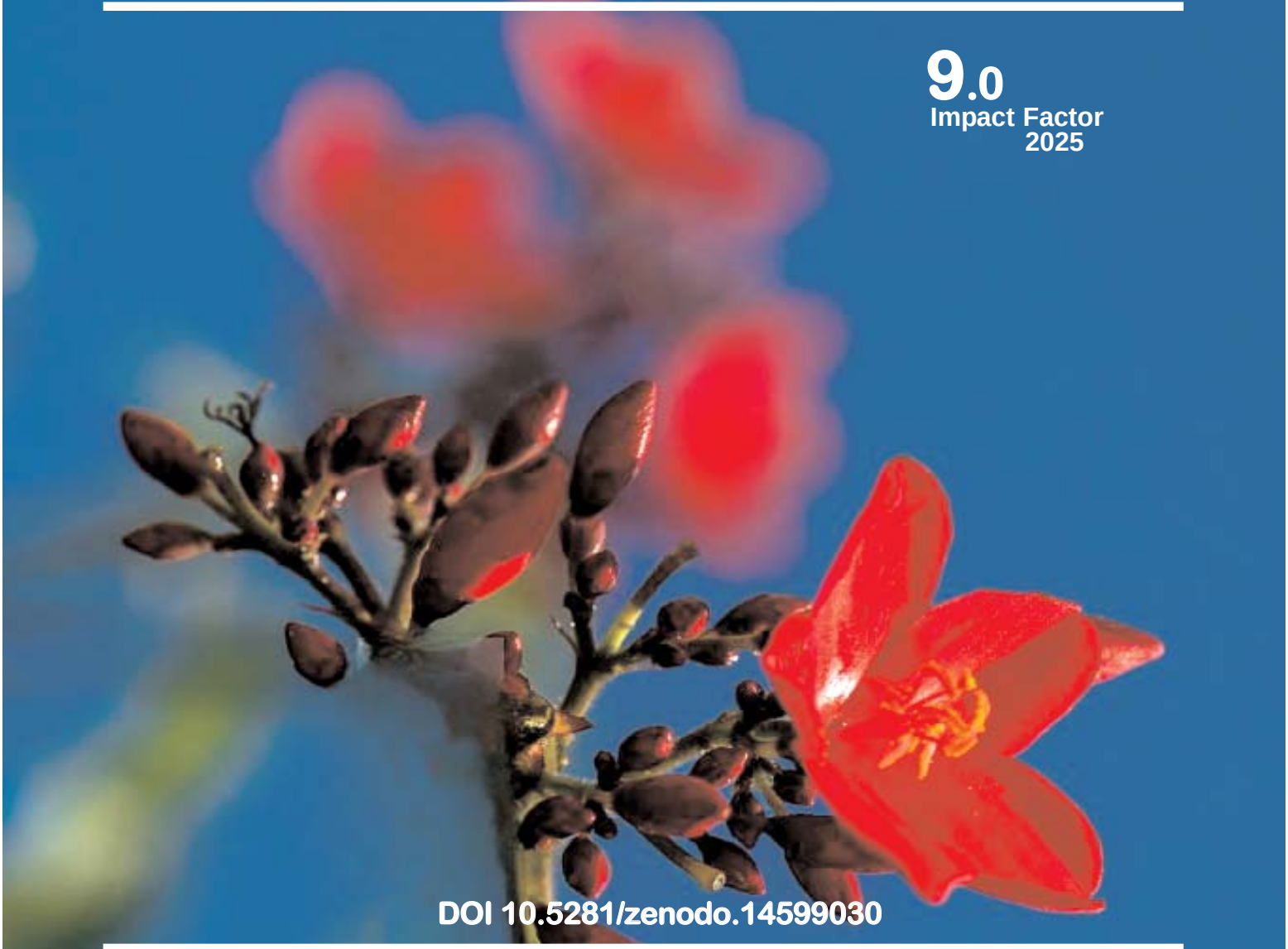

DOI 10.5281/zenodo.14599030

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 9.0

» aksharwartajournal@gmail.com » https://www.aksharwartajournal.page/ » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

# अक्षर वार्ता

मूल्यः 250 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-21 अंक - 6 , अप्रैल - 2025
Vol - XXI, Issue No. VI
April - 2025
Impact Factor - 9.0
aksharwartajournal@gmail.com

DOI 10.5281/zenodo.14599030

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

संपादक
डॉ. मोहन बैरागी
अक्षरवार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक मंडल

प्रो. जगदीशचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. राजश्री शर्मा, प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. डी. डी. बेदिया, विभागाध्यक्ष
पं. जवाहर लाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध
संस्थान, एवं निदेशक, आईक्यूएसी,
विक्रम युनिवर्सिटी, उज्जैन, मप्र.
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' जनसंपर्क
अधिकारी, आरजीपीवी, भोपाल, मप्र.
प्रो. उमापति दिक्षित, प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
प्रो. मोहसिन खान, विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रायगढ़, महाराष्ट्र
डॉ. दिग्विजय शर्मा, सहायक प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
डॉ. भेरूलाल मालवीय, सहायक प्राध्यापक
शा. नवीन महाविद्यालय, शाजापुर, मप्र.
डॉ. उपेन्द्र भार्गव, सहायक प्राध्यापक
महर्षि पाणिनि विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
डॉ. रूपाली सारये, सहा.प्राध्यापक
भाषा विभाग, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना, एसो. प्रोफेसर,
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वि.वि, इंदौर, मप्र.
डॉ. पराक्रम सिंह, के.हि.सं., दिल्ली

*विशेषज्ञ समिति*

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),
डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस),
प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), डॉ. सोहेल मो. यूसूफ (ओमान), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),
डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

*सह संपादक*

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान),
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद),
प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

*नोट:- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।*

## अनुक्रम


» भारतीय ज्ञान परंपरा का सातत्य
चंदन कुमार 08

» राजेश जोशी की कविताओं में राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष
नबी हुसैन 12

» राष्ट्रीय चेतना और इक्कीसवीं सदी के हिन्दी नाटक
प्रियनाथ कुमार 15

» उपन्यासकार : डॉ. रामदरश मिश्र
प्रा. डॉ. सतीश दत्तात्राय पाटील 19

» सूखा बरगद : वर्तमान भारतीय मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज : एक अध्ययन
मनोज कुमार वर्मा 21

» हरिवंशराय बच्चन के मधुशाला काव्य का शिल्पगत अनुशीलन
श्रीमती कमला बाई दीवान
प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल 25

» मीरां का जीवन - संघर्ष
डॉ. ललित सिंह रावल 29

» समकालीन हिंदी कहानी और पितृसत्तात्मक व्यवस्था
डॉ. पूजा 32

» उत्तर प्रदेश के राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत महिला अनुदेशिकाओं के विभिन्न समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन
नीतेश कुमार तिवारी 35

» उरावं जनजाति की संस्कृति एवं परंपरा
डॉ. शिव कुमार बंजारे 38

» युवाओं में मानसिक तनाव कम करने में ई-लर्निंग प्लेटफार्म की भूमिका : सकारात्मक अध्ययन
राखी 41

» भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द की भूमिका : एक अध्ययन
डॉ. अमृता कुमारी 44

» नवाब सुल्तान जंहा बेगम द्वारा बनाई गई न्याय व्यवस्था
डॉ. तनु पवांर 47

» मंगलेश डबराल की कविताओं में भाषा एवं बिम्ब विधान : संक्षिप्त अवलोकन
काम्या भारद्वाज, प्रो. डॉ. मोहन लाल मौर्य 49

» प्रेमचंद की कहानियों में दलित विमर्श
सोनाली राज 52

» परसाई की पचपन पैनी पंक्तियाँ
डॉ. रमेशकुमार टण्डन 55

» नवाब सुल्तान जंहा बेगम के शासन काल की जेल व्यवस्था
डॉ. तनु पवांर 59

» ओडिया भाषा के साहित्यकार फकीर मोहन सेनापति के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना
डॉ. धर्मेन्द्र कुमार 62

» सूर्योपासना : भारतेरानी संस्कृति के आलोक में
अविनाश कुमार आजाद 65

» साहित्य एवं पर्यावरण चिंतन : भारतीय और पाश्चात्य मत
मनीष सोलंकी 68

» प्रवासी साहित्य - हिन्दी साहित्य की नवाभूमि
डॉ. संजय कुमार तिवारी, डॉ. नंदिनी तिवारी 71

» लोक साहित्यकार रामफल चहल की लघुकथाओं में हास्य-व्यंग्य
डॉ. ज्योति 75

» लोकबाबू के उपन्यास में वर्णित आदिवासी जीवन का समाजिक यथार्थ (संदर्भ : भारतीय संस्कृति और साहित्य)
श्रीमती नीलम सिंह, डॉ. पन्नालाल यादव 77

» डॉ. विवेकी राय के उपन्यास 'नमामि ग्रामम्' में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण : सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन की खोज
पवन कुमार 80

» चिंता विकारों में संगीत चिकित्सा
डॉ. अंजना बंसल 83

» जनमत को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका
नवीन कुमार 86

» अमरकांत की कहानियों में युगीन परिवेश एवं समसामयिक समस्याएँ
मंजूषा केरकेट्टा 89

» विवेकी राय के उपन्यासों का शिल्प विधान
डॉ. गिरीश कुमार शांडिल्य 93

» भगवानदास मोरवाल का उपन्यास मोक्षवन और कलापूर्ण सफेद पुतलों की त्रासद कथा
अनुराग वर्मा 97

» सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन
नितेश कुमार मौर्य, डॉ. सुनीता सिंह 101

» हिंदी उपन्यासों में थर्ड जेंडर की स्थिति : एक सामाजिक विश्लेषण
लीलू कुमारी 104

» दलित वर्ग में राजनीतिक चेतना का निर्माण : डॉ. भीमराव अंबेडकर का चिंतन एवं कार्य
देशराज यादव 107

» माघ काव्य में रूपक
डॉ. अनिल मुवेल 111

» नारी सशक्तिकरण : गांधी चिंतन में
गज़ाला तबस्सुम 113

» नाट्य और रस का शास्त्रीय अध्ययन
डॉ. राखी मिश्रा 116

» लोकगीतों में नीति एवे दर्शन
रणधीर आठिया 120

अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 9.0
Vol - XXI, Issue - VI, April - 2025

"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
DOI 10.5281/zenodo.14599030

# परसाई की पचपन पैनी पंक्तियाँ

**डॉ. रमेशकुमार टण्डन**

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खरसिया, रायगढ़, छत्तीसगढ़

व्यंग्यकार हमेशा महश्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये नीम की तरह कड़वी गोली को शहद की परत में मनुष्य को ऐसे खिलाते हैं कि खाते समय मुँह मीठा परन्तु अन्दर जाते ही गोली का असल प्रभाव दिखने लगता है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा, जिस पर परसाई जी ने अपनी लेखनी से प्रहार न किया हो। विविध महत्वपूर्ण व्यंग्य-निबन्ध संग्रहों के माध्यम से उनके तीक्ष्ण विचार इस शोध पत्र में प्रस्तुत है।

अभावों में भय समाप्त हो जाता है, फिर लेखनी पैनी हो जाती है - डॉ0 रमेश टण्डन

मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ में परसाई जी राजनीतिक दल-बदल पर कहते हैं, ''मैंने समझ लिया कि मेरे जीवन का सत्य मंत्री बनना है। इस सत्य के लिए मैंने ईमान, धर्म सबका परित्याग किया, सत्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग करना पड़ता है। सत्य मुझसे कभी नहीं छूटा। किसी भी पार्टी का मंत्रीमण्डल हो, मैं जरूर मंत्री रहा; जिनका मंत्रीमण्डल बना, मैं उसी का हो गया। आप मेरे आदर्श पर चलें।''[1] आप पण्डितों की संस्कृत जानकारी और भक्तों के अंधविश्वास पर लेखक कुठाराघात करते दिखाई देते हैं, ''आजकल कौन संस्कृत समझता है? और पंडित क्या कह रहा है, इसे भी कौन सुनता है? वे तो 'अम' और 'अह' इतना ही जानते हैं। मैं इस तरह मंगल श्लोक पढ़ दूँ, तो भी कोई ध्यान नहीं देगा- 'ओम जेक एंड जिल वेंट अप दि हिल, टू फेच ए पेल आफवाटरम्, ओम जैक फैल डाउन एण्ड ब्रोक हिज क्राउन एंड जिल केम टंबलिंग आफ्टरम्! कुर्यात् सदा मंगलम्।''[2] इंजीनियर्स को आड़े हाथों लेते हैं, ''ठीक है, समझ गया। ऊपर से प्लास्टर हो ही चुका है। इसमें भीतर से सेंधों में सीमेंट और रेत भरवा दीजिए। भीतर से प्लास्टर हो जाने पर एक बूंद नहीं आएगी।''[3] विविध बड़े लोगों को अपनी तीक्ष्ण लेखनी का शिकार बनाते हैं, ''जमाखोर और मुनाफाखोर साल भर अनुष्ठान करते हैं। स्मगलर, महाकाल को नरमुण्ड भेंट करता है। इंजीनियर की पत्नी भजन गाती है-प्रभु, कष्ट हरो सबका। प्रभो, इस साल भी इधर अकाल कर दो और 'इनको' राहत कार्य का इंचार्ज बना दो। तहसीलदारिन, नायबिन, ओवरसियरिन सब प्रार्थना करती हैं। सुना है विधायक भार्या और मन्त्री प्रिया भी अनुष्ठान करती हैं।''[4]

ठिठुरता हुआ गणतंत्र में उल्लेख मिलता है, ''स्वतंत्रता दिवस भीगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है।'' ''जो पानी छानकर पीते हैं, वे आदमी का खून बिना छना पी जाते हैं।'' ''गाली वही दे सकता है, जो रोटी खाता है। पैसा खाने वाला सबसे डरता है।'' ''इस देश में जो किसी की नौकरी नहीं करता, वह चोर समझा जाता है।''[5] उच्च शिक्षा विभाग की मांगें एवं उस पर सचिव स्तर की टिप्पणी पर परसाई जी लिखते हैं, ''विचार के बाद शिक्षा सचिव ने प्रिंसिपल को लिखा - रिकार्ड देखने से मालूम होता है कि यह कॉलेज 1930 में खुला था। तबसे अभी तक कभी लड़कों ने लघुशंका गृह की मांग नहीं की। मालूम होता है, 1965 में पहली बार इस कॉलेज के लड़के लघुशंका कर रहे हैं। प्रश्न है कि जब 25 सालों तक लघुशंका नहीं की, तो अब एकाएक कैसे लग आयी। मुझे मांग की सफाई में शक है। कृपया फिर से जाँच करके लिखिए कि क्या लड़के लघुशंका करने लगे हैं।''[6] मानव प्रवृत्ति पर कटाक्ष- ''पुल लोगों के सुभीते के लिए बनवाया गया है, मगर दुष्ट लोग कहते हैं - देख लेना, इधर के खाली प्लाट में किसी 'बूढ़े' का मकान बनेगा, ऐसा न होता तो पुल क्यों बनता? इस देश के आदमी की मानसिकता ऐसी कर दी गई है कि अगर उसका भला भी करो, तो उसे शक होता है किसी और का भला किया गया है।''[7]

शिकायत मुझे भी है में परसाई जी धर्म को आड़े हाथों लेते हैं, ''कुरूपता सत्य है। जो अच्छा है, वही निस्सार है। जो बुरा है, वह सब ठोस है। वैसे तो जगत का वैभव ही मिथ्या माया है। तब अज्ञानी पूछता है-अगर सब मिथ्या माया है, तो मठ की गद्दी के लिए शंकराचार्य हाईकोर्ट में मुकदमा क्यों लड़ते हैं?''[8] विश्वबन्धुत्व की भावना पर लेखक का कटाक्ष-''विदेशी कहेगा- आपके देश की महान संस्कृति है।....हाँ, हम विश्वबन्धुत्व भी मानते हैं, यानी अपने भाई के सिवा बाकी दुनिया भर को भाई मानते हैं।''[9]

अपनी-अपनी बीमारी में समाज व नर-नारियों पर आपने व्यंग्य किया है। आप लिखते हैं, ''मिलते ही पवित्रता का मुँह धोकर उसे उजाला कर देते हैं। वे पिछले दिनों 2 लड़कियों के भागने, 3 स्त्रियों के गर्भपात, 4 की गैर विरादरी में शादी और दो पतिव्रताओं के प्रणय प्रसंग बता चुके हैं। 24-25 साल के लड़के-लड़की को भारत की सरकार बनाने का अधिकार तो मिल चुका है पर अपने जीवन साथी बनाने का अधिकार नहीं मिला।''[10] आगे लिखते हैं, ''60 साल के बूढ़े की तीन बीवियाँ मर चुकी थीं। बूढ़ा जायदाद वाला। संतान कोई नहीं। उसे बीवी तो चाहिए ही थी। वारिस न हो तो जायदाद हाय-हाय करती रहती है कि मेरा क्या होगा? आदमी को आदमी नहीं चाहिए। जायदाद को आदमी चाहिए।''[11] वह व्यंग्यकार श्रेष्ठ माना जाता है जो खुद की बुराई प्रकट करने के बहाने दूसरे की बंराई उजागर करता है। परसाई जी कहते हैं, ''मैं कभी चुनाव नहीं लड़ा। एक बार सर्वसम्मति से अध्यापक संघ का अध्यक्ष हो गया था। एक साल में मैंने तीन संस्थाओं में हड़ताल और दो अध्यापकों से भूख हड़ताल करवाई। नतीजा यह हुआ कि सर्वसम्मति से निकाल दिया गया।''[12] मानव प्रवृत्ति पर व्यंग्य- ''खुद कविता सुनाएंगे और मानवी करूणा से हम सबको पावन कर देंगे, पर कविता सुनाने के बाद किसी छात्र के नंबर घटाकर उसे फेल कर देंगे।''[13]

पगडण्डियों का जमाना में विपक्षी दल की हमेशा विरोधी विचारधारा

पर आप व्यंजना करते हुए कहते हैं, ''चीनी हमले के पहले हमने बजट में सैनिक खर्च का विरोध किया, फिर इस बात पर विरोध किया कि तैयारी क्यों नहीं की। और अब सरकार तैयारी के लिए पैसा वसूल करती है, तो हम उसका भी विरोध करते हैं। सरकार मेकमोहन रेखा को भारत की सीमा मानती है, तो हम आगे बढ़कर तिब्बत तक मानते हैं। कल अगर सरकार तिब्बत तक सीमा मानने लगे, तो हम मेकमोहन तक आ जाएंगे।''[14] सरकारी अफ़सरों पर व्यंग्य करते हैं, ''अफ़सर के इतने बड़े मकान बन जाते हैं कि वह राष्ट्रपति को किराए पर देने का हौसला रखता है। किस जादू से गोदाम में रखे गेहूँ का हर दाना सोने का हो गया! इसे बो दिया जाएगा, तो फिर सोने की फसल कट जाएगी।''[15] पुलिस विभाग पर व्यंग्य- ''टेलीफोन के संशोधन पर वैज्ञानिक खुशी से उछल पड़ा। वह अपने पूर्वज आर्कमिडीज की तरह नंगा होकर सड़क पर खुशी से दौड़ना चाहता था, पर वह कपड़े उतार ही रहा था कि उसे ख्याल आया, जमाना बदल गया है और मुझे पुलिस पकड़ लेगी। वैज्ञानिक अनुसंधान के सबसे महान क्षण में भी पुलिस को नहीं भूलता, यह मानव स्वतंत्रता के लिए शुभ लक्षण है।''[16] गंगा नदी के संबंध में लेखक का मत है, ''मैं प्रयाग में तीन दिन रहकर बिना गंगा नहाये लौट आया तो जिसने सुना, उसने थूका। लोगों की कल्पना से यह परे है कि कोई इतना अभागा भी होगा, जो प्रयाग जाए और त्रिवेणी में स्नान न करे। लोग तो बिना टिकट जाते हैं, रेल्वे कर्मचारियों की गाली सुनते हैं, संडास में छिपकर उनसे बचते हैं और गंगा स्नान करने आते हैं, तो निहायत उजले लगते हैं। गंगा पाप विनाशनी है। तमाम पापियों को स्वर्ग भेजती है।''[17]

विकलांग श्रद्धा का दौर में संसद की कार्यशैली पर परसाई जी कटाक्ष करते हैं, ''नन्दा - मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि सुबह मैंने हजामत बनवायी, नहाया और खाकर लोकसभा में आया। मूछें हैं या नहीं, यह भी मैं नहीं कह सकता, सरकार इसकी जाँच करेगी। कई सदस्य - सदन को तथ्य जानने का हक है। नन्दा- तो मैं कह तो रहा हूँ कि एक जाँच समिति बिठा रहा हूँ जो यह जाँच करेगी कि पहले मेरी मूँछ थी या नहीं।''[18] सरकारी अफ़सरों के संबंध में लिखते हैं, ''हमें बोनस और महंगाई भश्रा मिला है। इसके हिसाब से कीमतें बढ़नी चाहिए। पर इधर कीमतें एकदम घटा दी गई हैं। ऐसा कभी नहीं हुआ। यह हमारा अपमान है। हम कोई भिखमंगें हैं! हमारी भी नैतिकता है। सस्ता सामान खरीदना बेईमानी है।''[19] व्यापारी नीति पर करारी चोट करते हुए लिखते हैं, ''बच्चा दूध का घूँट लेता है और कै कर देता है, क्योंकि उसमें सस्ती शक्कर मिली है। लोग चाय की घूँट लेते हैं तो मतली आती है, क्योंकि चाय सस्ती है। लोग कुरता पहनते हैं तो शरीर खुजलाने लगता है, क्योंकि कपड़ा कम रेट का है। स्त्री बघार लगाती है, तो उसे चक्कर आ जाता है, क्योंकि तेल सस्ता और शुद्ध है।''[20] धार्मिक पुजारियों पर प्रहार-''पवित्रता का यह हाल है कि जब किसी मंदिर के पास से शराब की दुकान हटाने की मांग लोग करते हैं, तब पुजारी बहुत दुखी होता है। उसे लेने के लिए दूर जाना पड़ेगा। यहाँ तो ठेकेदार भक्तिभाव में कभी-कभी मुफ्त भी पिला देता था।''[21] साहित्यकारों पर व्यंग्य-''एक तो, उपन्यास लिखे बिना कोई पक्का लेखक नहीं बन सकता; दूसरे, उपन्यास पकौड़े की तरह बिकता है। खूब पैसे मिलते हैं। लोकप्रिय उपन्यास के फार्मूले होते हैं। एक ही स्त्री को कभी नर्स, कभी शिक्षिका, कभी क्लर्क, कभी टेलीफोन आपरेटर बना दो।''[22] लेखकों पर पुनः कटाक्ष-''हममें में से अधिकांश ने अपनी लेखनी को रण्डी बना दिया है। सत्ता इस लेखनी से बलात्कार कर देती है और हम रिपोर्ट नहीं करते। मैं इसी कलम से बलात्कार की प्रशंसा में भी फिल्मी गीत लिख सकता हूँ और भगवत् भजन भी लिख सकता हूँ। इसी कलम से तो मैंने पहले 'इंदिरा गांधी जिन्दाबाद' लिखा था फिर 'इंदिरा गांधी मुर्दाबाद' लिखा और फिर 'इंदिरा भारत है' लिख रहा हूँ।''[23] पी-एच डी उपाधि प्राप्त करने के तरीके पर प्रहार-''डाक्टरेट, अध्ययन और ज्ञान से नहीं, आचार्य कृपा से मिलती है। आचार्यों की कृपा से इतने 'डाक्टर' हो गए हैं कि बच्चे खेल-खेल में पत्थर फेंकते हैं तो किसी डाक्टर को लगता है। एक बार चौराहे पर यहाँ पथराव हो गया। पाँच घायल अस्पताल में भर्ती हुए और वे पाँचों हिन्दी के डाक्टर थे। नर्स अपने अस्पताल के डाक्टर को पुकारती, 'डाक्टर साहब' तो बोल पड़ते थे ये हिन्दी के डाक्टर।''[24] आत्म व्यंग्य करते हुए खुद के मरने के बाद की स्थिति पर लिखते हैं, ''मेरे बारे में अखबारों में क्या छपे, यह मैं खुद तैयार करके रखके जा रहा हूँ। अपने कई फोटोग्राफमैंने छोड़े हैं। ये छापे जाएँ।''[25] पर स्त्री मोह पर लिखते हैं-''स्त्री पूछती है - क्या सिर में दर्द है? वे कहते- हाँ, सिर फटा पड़ता है। स्त्री सहज ही उनका सिर दबा लेती। उनकी पत्नी ने ताड़ लिया। कहने लगी - क्यों जी, जब कोई स्त्री तुम्हें देखने आती है तभी तुम्हारा सिर क्यों दुखने लगता है? उसने जवाब भी मामूल दिया। कहा- तुम्हारे प्रति मेरी इतनी निष्ठा है कि पर स्त्री को देखकर मेरा सिर दुखने लगता है। 'जान प्रीत-रस इतनेहूँ माहीं।''[26]

सदाचार का ताबीज में चुनाव को लेकर उन्होंने लिखा है, ''बन्नू ब्राम्हण है और राधिका प्रसाद कायस्थ। ब्राम्हणों को भड़काओ, इधर कायस्थों को।''[27] सरकारी अफ़सरों की कार्यप्रणाली पर व्यंग्य किया गया है, ''हुजूर, हम किसानों को आप जमीन, पानी और बीज दिला दीजिए और अपने अफ़सरों से हमारी रक्षा कर लीजिए, तो हम देश के लिए पूरा अनाज पैदा कर देंगे। सरकारी प्रवक्ता- अन्न की पैदावार के लिए किसान की अब जरूरत नहीं है। हम दस लाख एकड़ कागज पर अन्न पैदा कर रहे हैं।''[28] प्राध्यापकों पर लिखते हैं, ''प्रोफेसर मिस सूद पाक शास्त्र बहुत अच्छा पढ़ाती है; पर खाना बहुत खराब बनाती है। उन्हें प्रिंसिपल साहिबा के भाई से गर्भ रह गया था। उन्होंने जहर खा लिया। बेचारी ने कैरेक्टर रोल अच्छा लिखवाने के लिए वैसा किया था।''[29]

बेईमानी की परत में चुनाव पर लिखते हैं, ''लेकिन देखता हूँ कि लोग बार-बार हारकर भी चुनाव में खड़े होते हैं, जैसे स्त्री प्रसव-पीड़ा से त्रस्त हो, फिर कभी उस मार्ग पर न जाने की कसम खाती है, पर फिर उसी मार्ग पर जाती है।''[30] व्यापारी नीति पर कटाक्ष- ''व्यापारी पहले ग्राहक के पीछे विज्ञापन दौड़ाता था और ग्राहक उससे कतराकर निकल जाता था। तब व्यापारी ने विज्ञापन में तारीखें जड़ीं और तस्वीर मढ़ीं। अब ग्राहक विज्ञापन के पीछे दौड़ता है और विज्ञापन उसे चकमा देता है।''[31] अंधविश्वास की पराकाष्ठा को इस प्रकार रेखांकित करते हैं, ''हमें याद था कि कुछ साल पहिले एक भेड़ चराने वाले लड़के का चमत्कारी बालक के रूप में प्रचार करके पत्रकारों ने लाखों की भीड़ जमा कर दी। वहाँ हैजा हो गया और कई श्रद्धालु वहीं अंधविश्वास की वेदी पर बलि हो गए।''[32] पौराणिक कटाक्ष- ''इन्द्र ने तो तपस्वियों को ठगने के लिए अप्सराओं की एक पलटन ही रखी थी और कई मुनि इसी आशा से तपस्या करते थे कि तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र कोई अप्सरा भेजेगा।''[33] पुरूषों के सजने-सँवरने पर भी तीखा प्रहार दिखाई देता है, ''मेरे एक परिचित खिजाब लगाते थे। शनिवार को वे बूढ़े लगते और सोमवार को जवान - इतवार उनके रंगने का दिन था। न जाने वे ढलती उम्र में काले बाल किसे दिखाते थे। शायद तीसरे विवाह की पत्नी को।''[34] वकीलों पर शिकंजा- ''एक बार कचहरी चढ़ जाने के बाद सबसे बड़ा काम है, अपने

ही वकील से अपनी रक्षा करना।''[35] परसाई जी कवि बिहारी की पंक्ति का उद्धरण देते हुए लिखते हैं, ''पुराने जमाने में सुंदरियों के लिए ऐसी सर्जरी होती होगी कि इस अंग का कुछ काटकर उस अंग में चिपका दिया। प्रमाण चाहिए तो बिहारी की यह पंक्ति काफी है- 'कटि को कंचन काटि कै, कुचन मध्य धरि दीन।''[36] आत्म व्यंग्य- ''हम सबने दुबले होने को अपनी नियति मान लिया है। कोई मोटा हो जाता है, तो हजार अंगुलियाँ उठने लगती हैं। लोग यह समझ रहे थे कि या तो मैं गांजा-शराब के 'स्मगलिंग' में लगा हूँ, या किसी संस्था का मंत्री बनकर चंदा खा रहा हूँ, या कहीं से काला पैसा ले रहा हूँ, या घूसखोरी के लिए किसी का एजेंट हो गया हूँ।''[37] खुद पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं, ''चेखव की एक कहानी में मुझ जैसा एक पात्र है जो मृत्यु पर भाषण करने में उस्ताद है। उसके पास 'रेडीमेड' भाषण है। उसे लोग सोते से उठाकर श्मशान भूमि ले जाते हैं, मरने वाले का नाम मात्र बता देते हैं और वह धड़ल्ले से शोकपूर्ण भाषण दे देता है। एक बार नशे की झोंक में वह नामों में गड़बड़ा गया और उस व्यक्ति की मृत्यु पर बोल गया, जो उसके ठीक सामने खड़ा था।''[38] मानव प्रवृत्ति पर चुटकी- ''दो-चार निंदकों को एक जगह बैठकर निन्दा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए दो-चार ईश्वर भक्तों से, जो रामधुन लगा रहे हों। निन्दकों की सी एकाग्रता, परस्पर आत्मीयता और निमग्नता, भक्तों में दुर्लभ है।''[39] मानव प्रवृत्ति पर व्यंग्य- ''ब्रम्हानंद तब प्राप्त होता है, जब साधक परमात्मा को ठग लेता है। कई तपस्वी ब्रम्हानंद की प्राप्ति के लिए पूरी जिंदगी साधना में बरबाद कर देते थे। वे अगर स्थानीय पान वाले के पास एक खोटी चवन्नी चला देते, तो उन्हें सहज ही ब्रम्हानंद प्राप्त हो जाता।''[40] अभिवादन शैली पर बड़ी मधुरता के साथ मजा लेते हैं, ''मैं उन्हें पहिले ही नमस्कार कर लेता। वे समझे होंगे कि मैं उनका भक्त हो गया। अब वे सड़क पर मिलते तो दूर से ही मेरी ओर टकटकी लगाए, मेरे हाथ जुड़ने की राह देखते रहते। उत्सुकतावश उनके हाथ दो-तीन बार आधे रास्ते तक आकर फिर गिर जाते। वे पहिले हाथ कैसे उठाते?''[41] कुँवारों को घर किराया पर नहीं देने की बात पर लिखते हैं, ''मालिकों में आपस में मामले हो जायें तो कोई बात नहीं, पर किरायेदार से तो नहीं होना चाहिए। मगर शादी शुदा आदमी की क्या गारन्टी? वह एक बार तो संयम टूटने का सबूत दे ही चुका है। तभी तो शादी की। क्या निश्चित कि बार-बार उसका संयम नहीं टूटेगा?''[42] प्रेमचंद के फटे जूते को लेकर आप एक व्यंग्य निबंध तक लिख डालते हैं, ''फोटो खिंचाने के लिए तो, बीवी तक मांग ली जाती है, तुमसे जूते ही मांगते नहीं बने! तुम फोटो का महश्व नहीं जानते। लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए। गन्दे से गन्दे आदमी की फोटो भी खुशबू देती है।''[43] नसबंदी पर लेखक के विचार ''भारत में जिस हिसाब से बच्चे पैदा हो रहे हैं, उस हिसाब से मकान नहीं बन रहे हैं। सरकार को कानून बना देना चाहिए कि हर बच्चा पैदा होने पर बाप को एक मकान बनवाकर देना होगा। इससे संतति नियमन एकदम हो जाएगा और कुछ मकान भी बन जाएंगे। कुछ लोग तो ऐसे निकलेंगे ही जो मकान क्या, अनाथालय बनवा देंगे, पर संतति निरोध नहीं करेंगे।''[44] चंदा के महत्व पर टिप्पणी करते हैं, ''यह क्यों कहा जाता है कि सर्वोत्तम दान वह है जिसमें बायां हाथ न जाने कि दाहिने ने क्या दिया? चंदा खाने वाले के सुभीते के लिए ही गुप्त दान की परम्परा को महत्व मिला है।''[45]

निठल्ले की डायरी में परसाई जी विपक्षी दल पर प्रहार कुछ इस प्रकार किए, ''मंत्री ने जवाब दिया - विरोधी सदस्यों के सब आरोप झूठे हैं। हमने उस कुत्ते का पोस्टमार्टम कराया है। बस के पहिये की भी रासायनिक जाँच करायी है। रासायनिक की रिपोर्ट है कि कुत्ता बस से कुचलकर नहीं मरा। पहिये पर जो खून लगा था, उसके संबंध में रासायनिक का मत है कि वह कुश्रे का खून नहीं है। एक सदस्य - तो वह किसका खून है ? मंत्री - वह आदमी का खून है। इस पर संसद में थोड़ी देर भुनभुनाहट होती रही। विरोधी पक्ष निराश हो गया था।''[46] अस्पताल पर आपका व्यंग्य- ''इनके हिसाब में देखो- कई नाम लिखे रहते हैं, जिनके लिए दवा स्टोर से निकल जाती है। वे वास्तविक आदमी नहीं होते, प्रेत होते हैं। मेरे मरने के बाद इन लोगों ने मेरा नाम रजिस्टर पर चढ़ा लिया और खर्च बताने लगे।''[47] धार्मिक मान्यता पर आपके द्वारा की गई व्यंजना-''बच्चा, तुम मनुष्य को मरने दो। माँ की रक्षा करो। कोई भी जीवधारी, मनुष्य से श्रेष्ठ है। तुम देख नहीं रहे हो, गोरक्षा के जुलूस में जब झगड़ा होता है, तब मनुष्य ही मारे जाते हैं।''[48] आबकारी विभाग में पदस्थ अधिकारियों की पत्नी पर तंज-''चार बच्चे खूब बढ़िया कपड़े पहिनते हैं और स्त्री जब बाहर निकलती है, तब स्त्री कम मालूम होती है, चलता-फिरता साफा बाजार अधिक... रूप है, गहने हैं - बड़ी ठसक से चलती है मानों सात परिवारों की स्त्रियों को पाँवों से रौंदती जाती हो। पविव्रता ऊँचे दर्जे की है - दिन भर सड़क पर पाण्डे की राह देखती है।''[49]

वैष्णव की फिसलन में रेल पर आप प्रहार करते हैं, ''मुझमें यात्रा की घबराहट है। बर्थ की घबराहट है। मैं बार-बार टिकट निकालकर देखता हूँ। आज का ही है। कहीं जाली तो नहीं है ? रिजर्वेशन सही है कि नहीं? कोई भरोसा नहीं।''[50] ताली पीटने वालों की मनोदशा पर कटाक्ष-''बड़े लोगों के क्लब में मैं भाषण दे रहा था। मैं देश की गिरती हालत, महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार पर बोल रहा था और खूब बोल रहा था। मैं पूरी पीड़ा से, गहरे आक्रोश से बोल रहा था। पर जब मैं ज्यादा मार्मिक हो जाता, वे लोग तालियाँ पीटते थे। मैंने कहा- हम लोग बहुत पतित हैं, तो वे लोग ताली पीटने लगे।''[51] छात्रावास की व्यवस्था को लेकर लेखक की व्यथा-''आदिवासी छात्र जो सरकार से स्कालरशिप पाकर मजे में होस्टल में रहकर पढ़ता है, रोज सबेरे प्रार्थना के बाद प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री और आदिवासी मंत्री की जय बोलता है। पर जब ये लड़के अलग बैठते हैं, तब कहते हैं कि साले घटिया खाना खिला रहे हैं।''[52] परसाई रचनावली- 3 में व्यंग्यकार परसाई जी मानव प्रवृश्रि पर लिखते हैं, ''पत्नी को परीक्षा में बैठने के लिए प्रोत्साहित करने वाले एक सज्जन, परसाई के घर आ गए। उनके हाथ में एक पाठ्यपुस्तक थी। कहने लगे - 'थोड़ी सी तकलीफदूँगा। इसमें से कबीरदास के पदों का अर्थ समझा दीजिए।' मैंने कहा - 'आप क्या किसी इम्तहान में बैठ रहे हैं?' वे बोले, 'जी नहीं, वाइफबैठ रही है।' मैंने कहा, 'लेकिन अर्थ तो आप समझ रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'मैं समझ लूंगा, फिर उन्हें समझा दूंगा।' मैंने कहा, 'वे ही क्यों नहीं समझ लेती?' वे चुप हो गए। मैंने सोचा- 'यह तो मुझे लम्पट समझता है या अपनी पत्नी को कुल्टा। उसे डर है कि कबीर समझाते-समझाते मैं विद्यापति न समझाने लगूं।' मैंने कहा, 'देखिए, आप साहित्य के विद्यार्थी कभी रहे नहीं। मैं जो समझाऊंगा उसका 50 प्रतिशत आपके पास रह सकेगा। उसमें से 25 प्रतिशत अपनी पत्नी को दे पायेंगे। मगर पास होने के लिए 33 प्रतिशत चाहिए। यानी आपके अर्थ समझने से तो वे फेल हो जायेंगी।' उन्होंने सोचा फिर कहा, 'आप ठीक कहते हैं। उन्हें ही समझना चाहिए।' कबीर पर तो वे राजी हो गए। मैंने धीरे से कहा, इसमें विद्यापति तो भी है। वे सावधान थे। तपाक से बोले, 'उसे जाने दीजिए। वह तो अश्लील है।' मैं समझ गया। मन में कहा, तू क्या कबीर को भला आदमी समझता है! अरे कबीर अगर कोई ढंग से समझ ले तो विद्यापति से ज्यादा खतरनाक हो सकता है। 'मन फूला-फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे।' आप ठीक से पत्नी समझ लें तो तेरी गृहस्थी ही टूट जाए।''[53] धार्मिक-

सामाजिक बुराई पर कटाक्ष- ''औरत भूख के कारण वेश्या होती है और जरा उन...से पूछा जाए जो तीन बीवियाँ रखे हैं। जनाब, एक बीवी तो काफी हुई, आपके साथ सोने, रोटी बनाने और बच्चा पैदा करने के लिए, फिर ये बाद की दो बीवियाँ किसलिए? ये तो रंडियाँ ही हुई न जिन्हें आपने रोटी-कपड़े पर रख छोड़ा है, आपके जिश्म की ख्वाहिश पूरी करने के लिए, या आप खुद 'मर्द' वेश्या हैं जो तीन औरतों की जरूरत पूरी कर रहे हैं।''[54] आप राजनीति/ साहित्यकार पर लिखते हैं, ''मैं लगातार देख रहा हूँ कि राजनीति और साहित्य में बहुत लोग आपरेशन करवा के रीढ़ की हड्डी निकलवा लेते हैं। फिर इन्हें बोरे में भर लीजिए या सूटकेश में डाल लीजिए और कुली पर लदवाकर चाहे जहाँ चले जाइए।''[55]

**संदर्भ सूची:-**


1. परसाई, हरिशंकर; मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ क्र. 142
2. परसाई, हरिशंकर; मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ क्र. 126
3. परसाई, हरिशंकर; मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ क्र. 37
4. परसाई, हरिशंकर; मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ क्र. 69
5. परसाई, हरिशंकर; ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृष्ठ क्र. 3
6. परसाई, हरिशंकर; ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृष्ठ क्र.40
7. परसाई, हरिशंकर; ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृष्ठ क्र. 99
8. परसाई, हरिशंकर; शिकायत मुझे भी है, पृष्ठ क्र. 17
9. परसाई, हरिशंकर; शिकायत मुझे भी है, पृष्ठ क्र. 66
10. परसाई, हरिशंकर; अपनी-अपनी बीमारी, पृष्ठ क्र. 37
11. परसाई, हरिशंकर; अपनी-अपनी बीमारी, पृष्ठ क्र. 40
12. परसाई, हरिशंकर; अपनी-अपनी बीमारी, पृष्ठ क्र. 117
13. परसाई, हरिशंकर; अपनी-अपनी बीमारी, पृष्ठ क्र. 63
14. परसाई, हरिशंकर; पगडण्डियों का जमाना, पृष्ठ क्र. 30
15. परसाई, हरिशंकर; पगडण्डियों का जमाना, पृष्ठ क्र. 10
16. परसाई, हरिशंकर; पगडण्डियों का जमाना, पृष्ठ क्र. 48
17. परसाई, हरिशंकर; पगडण्डियों का जमाना, पृष्ठ क्र. 72
18. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 129
19. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 31
20. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 62
21. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 48
22. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 54
23. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 48
24. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 30
25. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 55
26. परसाई, हरिशंकर; विकलांग श्रद्धा का दौर, पृष्ठ क्र. 32
27. परसाई, हरिशंकर; सदाचार का ताबीज, पृष्ठ क्र. 120
28. परसाई, हरिशंकर; सदाचार का ताबीज, पृष्ठ क्र. 138
29. परसाई, हरिशंकर; सदाचार का ताबीज, पृष्ठ क्र. 09
30. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 113
31. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 62
32. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 77
33. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 43
34. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 19
35. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 111
36. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 126
37. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 127
38. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 106
39. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 35
40. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 42
41. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 51
42. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 89
43. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 39
44. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 88
45. परसाई, हरिशंकर; बेईमानी की परत, पृष्ठ क्र. 114
46. परसाई, हरिशंकर; निठल्ले की डायरी, पृष्ठ क्र. 54
47. परसाई, हरिशंकर; निठल्ले की डायरी, पृष्ठ क्र. 24
48. परसाई, हरिशंकर; निठल्ले की डायरी, पृष्ठ क्र. 134
49. परसाई, हरिशंकर; निठल्ले की डायरी, पृष्ठ क्र. 117
50. परसाई, हरिशंकर; वैष्णव की फिसलन, पृष्ठ क्र. 30
51. परसाई, हरिशंकर; वैष्णव की फिसलन, पृष्ठ क्र. 40
52. परसाई, हरिशंकर; वैष्णव की फिसलन, पृष्ठ क्र. 108
53. परसाई, हरिशंकर; परसाई रचनावली-3, पृष्ठ क्र. 105
54. परसाई, हरिशंकर; परसाई रचनावली-3, पृष्ठ क्र. 152
55. धर्मयुग 17 मई 1973, पृष्ठ क्र. 23

स्वत्वाधिकारी,प्रकाशक,मुद्रक डॉ.मोहन बैरागी द्वारा अक्षरवार्ता पब्लिकेशंस से मुद्रित व 43, क्षीर सागर, द्रविढ़ मार्ग, उज्जैन, मप्र,-456006 से प्रकाशित।
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा। संपादक- डॉ. मोहन बैरागी, संपर्क :-8989547427, **Email- aksharwartajournal@gmail.com**